

विद्यालयी वातावरण और संसाधनों का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Anamika

Ph.D. Scholar

Department of Political Science

Malwanchal University Indore, (M.P.).

Dr. Kehar Singh

Supervisor

Department of Political Science

Malwanchal University Indore, (M.P.)

शोध सारांश

वर्तमान शोध पत्र में विद्यालयी वातावरण और संसाधनों का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह देखा जाएगा कि कि विभिन्न विद्यालयों के शैक्षिक और सामाजिक वातावरण, साथ ही वहां उपलब्ध संसाधन जैसे कि शिक्षकों का समर्थन, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं, खेलकूद सुविधाएं और शैक्षिक सामग्री, विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास और आत्म-संयम पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। शोध में यह भी पता लगाया जाएगा कि किस प्रकार का विद्यालयी वातावरण और कौन से संसाधन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, समवेदनशीलता और आत्मविश्वास में वृद्धि करते हैं, और कैसे यह उन्हें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से निपटने में सक्षम बनाते हैं। अध्ययन में विभिन्न विद्यालयों के 400 किशोरों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता का मूल्यांकन किया गया। प्रदत्तों के संकलन एवं मूल्यांकन के पश्चात अगला पद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग में एनोवा (प्रसरण विधि) तथा टी-अनुपात का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य का उपयोग किया गया है निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि माध्यमिक विद्यालय के किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि और अभिरुचि के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। प्रस्तुत शोध में इसी योगदान पर प्रकाश डालते हुए शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के किशोरों में अभिप्रेरणा सम्बंधी समस्याओं पर मनोवैज्ञानिक कारकों का अभिरुचि एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया है।

1. कूटशब्द: विद्यालयी वातावरण, संवेगात्मक परिपक्वता ।

2. प्रस्तावना

विद्यालयी वातावरण और संसाधनों का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण और समयानुकूल शोध है, क्योंकि आज के प्रतिस्पर्धात्मक और मानसिक दबावों से भरे हुए समाज में विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस हो रही है। विद्यालय केवल शैक्षिक ज्ञान का केंद्र नहीं होते, बल्कि ये विद्यार्थियों के भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण स्थल होते हैं।¹ इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि विद्यालय का वातावरण, जिसमें शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू शामिल हैं, तथा वहां उपलब्ध संसाधन जैसे कि शिक्षकों का मार्गदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं, खेलकूद की सुविधाएं, और सहायक शैक्षिक सामग्री, विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। यह अध्ययन यह भी देखने की कोशिश करेगा कि विभिन्न विद्यालयों में इन तत्वों की उपस्थिति और गुणवत्ता विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास, आत्म-नियंत्रण, सामाजिक समर्पण और आत्म-संवेदनशीलता को किस हद तक प्रभावित करती है। इस शोध का उद्देश्य विद्यालयी वातावरण और संसाधनों की भूमिका को उजागर करना है, ताकि विद्यार्थियों के संवेगात्मक और मानसिक विकास के लिए प्रभावी उपायों की पहचान की जा सके।²

3. शोध की परिभाषाएँ

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विशिष्ट पदों की व्याख्या शोध समस्या के स्पष्टीकरण हेतु आवश्यक एवं महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके माध्यम से शोध में प्रयोग किये गये शब्दों के निहितार्थ पूर्णतः स्पष्ट हो जाते हैं। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है।

¹ Emmerling, R. J., Shanwal, V. K., & Mandal, M. K. (Eds.). (2008). Emotional intelligence: Theoretical and cultural perspectives. Nova Publishers.

² Wang, M. T., Hill, N. E., & Hofkens, T. (2014). Parental involvement and African American and European American adolescents' academic, behavioral, and emotional development in secondary school. Child development, 85(6), 2151-2168.

● **संवेगात्मक परिपक्वता³**

संवेगात्मक परिपक्वता का सम्बन्ध उस वयस्क के संवेगात्मक प्रतिमान से है जो संवेग की अवस्था को पार कर चुका है। यह बचपन व किशोरावस्था की विशेषता है। संवेगात्मक परिपक्वता हर विद्यालय व समाज में भूमिका में होने वाले परिवर्तन, घर में प्रतिकूल संबंधों के होने, सामाजिक अपेक्षाओंका सामना करने, विपरीत लिंग के साथ समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ सामने आने, धार्मिक द्वन्द्व होने, विद्यालय में असफलताओं के मिलने परिवार के सदस्यों व मित्रों से द्वन्द्व होने, व्यावसायिक समस्याओं का सामना करने आदि के कारण उग्र हो जाती है। किशोरों में संवेग, प्रेम, स्नेह, चिंता, डर, क्रोध आदि के कारण उद्वेलित होते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता दो शब्दों के मेल से बना है, संवेग और परिपक्वता। संवेग एवं परिपक्वता के स्वरूप को अलग-अलग समझ लेना अत्यंत आवश्यक है।

● **विद्यालय वातावरण⁴:**

विद्यालय वातावरण से तात्पर्य उस शैक्षिक और सामाजिक संदर्भ से है, जिसमें विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। इसमें शैक्षिक वातावरण (कक्षा, पाठ्यक्रम, अध्ययन के तरीके), सामाजिक वातावरण (दोस्तों, सहपाठियों, शिक्षकों के साथ संवाद), और भौतिक वातावरण (विद्यालय भवन, खेल का मैदान, पुस्तकालय, और अन्य सुविधाएं) शामिल होते हैं। यह वातावरण विद्यार्थी के मानसिक और भावनात्मक विकास, सामाजिक कौशल, और शिक्षा पर गहरा प्रभाव डालता है। विद्यालय का सकारात्मक वातावरण विद्यार्थी को प्रेरित करता है, जबकि नकारात्मक वातावरण उसके विकास में बाधा डाल सकता है।

● **विद्यार्थी**

विद्यार्थी वह व्यक्ति है जो किसी शैक्षिक संस्था में अध्ययन कर रहा है। यह शब्द सामान्यतः किसी भी उम्र के व्यक्ति को संदर्भित कर सकता है जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यालय,

³ ए डम्स हेनरी ई. 1972 साइकोलोजी ऑफ एडजस्टमेंट, द रोनाल्ड प्रसे कम्पनी, न्यूयार्क पृष्ठ संख्या 90

⁴ Higgins, S., Hall, E., Wall, K., Woolner, P., & McCaughey, C. (2005). The impact of school environments: A literature review. London: Design Council.

महाविद्यालय या अन्य शैक्षिक संस्थान में उपस्थित रहता है। विद्यार्थी की भूमिका केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह समाज में सक्रिय रूप से भागीदारी, सामाजिक और संवेगात्मक विकास, और विभिन्न जीवन कौशलों को भी सीखता है।

4. साहित्य का पुनरावलोकन

तन्वी जैन ने सन् (2010)⁵ में अपने अध्ययन में बताया कि सामाजिक रूप से संवेगनात्मक परिपक्वता विद्यार्थियों के व्यवहार को सामाजिक व्यवस्था, माता-पिता, अध्यापक तथा उन सभी लोगो की, जो उनकी जिन्दगी में कुछ महत्व रखते हैं, के अनुरूप ढालने के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही सामाजिक रूप से परिपक्व विद्यार्थी समाज में अपनी भूमिका के प्रति सचेत रहते हैं तथा इच्छित सामाजिक व्यवहार के अनुरूप आचरण करते हैं।

रोज, वनिता और खोखर ने सन् (2014)⁶ में भावनात्मक परिपक्वता और आत्म अवधारणा पर स्कूल के प्रकार, स्थानीयता और लिंग के मुख्य प्रभाव की अनुभवजन्य रूप से जाँच करने के लिए वर्तमान अध्ययन किया। रोहतक और सोनीपत जिले के हाई स्कूलों से 120 माध्यमिक छात्रों का एक नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया और उन्हें सिंह और भार्गव, (1991) द्वारा भावनात्मक परिपक्वता स्केल (ईएमएस) और आत्म अवधारणा स्केल (एससीएस, अहलूवालिया, 2002) द्वारा प्रशासित किया गया। डेटा का विश्लेषण श्टीश परीक्षण और सहसंबंध के गुणांक द्वारा किया गया था। परिणामों से पता चला कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और आत्म अवधारणा में महत्वपूर्ण रूप से सहसंबंध पाया गया और स्थानीयता और लिंग का मुख्य प्रभाव भावनात्मक परिपक्वता से जुड़ा हुआ पाया गया।

रश्मिता एवं जैशमिन ने सन् (2018)⁷ में अपने शोध आलेख श्चेन्नई में सार्वजनिक और निजी वित्त पोषित स्कूलों पर एक तुलनात्मक अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों डेटा का

⁵ देवी, ए0 (2010). पंजाब के छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके स्व-संकल्पना, उपलब्धि अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन, शोध ग्रन्थ, शिक्षा संकाय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

⁶ Rose, Vanita and Khokhar, Ritu, (2014), "Emotional Maturity and Self- Concept of Secondary School Students in Relation to Type of School, Gender and Locale", Indian journal of Psychology and Education, Vol.-4, No.2, pp. 33-37.

⁷ रश्मिता, के. और जैशमिन, के.एस. (2018 "चेन्नई में सार्वजनिक और निजी वित्त पोषित स्कूलों पर एक तुलनात्मक अध्ययन", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्योर एंड एप्लाइड मैथमैटिक्स (स्पेशल इश्यू), वॉल्यूम 120 नंबर 5] पृ. 245-254]

उपयोग कर माता-पिता की विशेषताओं की जाँच करने के लिए विश्लेषण किया है। उन्होंने पाया कि माता-पिता सार्वजनिक क्षेत्र के स्कूलों की तुलना में निजी क्षेत्र के स्कूलों को पसंद करते हैं। क्योंकि उनका मानना है कि सार्वजनिक क्षेत्र के स्कूलों में तुलनात्मक रूप से कम शैक्षणिक सुविधाएं और अनुपयुक्त शैक्षणिक माहौल है। साथ ही उनका मानना है कि सार्वजनिक स्कूलों में कुशल शिक्षकों की कमी है। इसलिए 90: माता-पिता संचार कौशल, करियर विकास और मानक बुनियादी ढांचे या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए निजी स्कूलों को चुन रहे हैं।

निसार, एम. ए., और मसूद, ए. ने सन् (2021)⁸ में राउस मारग्रट ने टेक्सास विश्वविद्यालय में किये गये अपने शोध-प्रबन्ध डिपार्टमेंटल स्कूल एवं नान डिपार्टमेंटल स्कूलों के पाठ्यक्रम, विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं कक्षा में अध्यापन की विधियों की तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि इन विद्यालयों के पाठ्यक्रमों तथा पढ़ने लिखने की विधियों में चौदह प्रकार के अन्तर विद्यमान हैं। इनका प्रभाव विद्यालयों में पढ़ने वाले किशोरों के शैक्षिक लब्धि को प्रभावित करता है ।

4. शोध के उद्देश्य

1. विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर ज्ञात करना ।
2. विद्यालय में अध्ययनरत विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विषयों के छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में अंतर ज्ञात करना ।

5. शोध की परिकल्पना

1. विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।
2. विद्यालय में अध्ययनरत विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विषयों के छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

⁸ Nisar, M. A., & Masood, A. (2021). Bureaucracy and the Other: A Systematic Review of Postcolonial Scholarship in Public Administration. Available at SSRN 3886409.

6. शोध विधि

वर्तमान अध्ययन के लिए जिस प्रकार के शोध का उपयोग किया गया है वह विवरणात्मक एवं खोजपूर्ण शोध है क्योंकि अनुसंधान के अध्ययन का क्षेत्र नया है और नए अध्ययन की नींव रखने वाले नए आधार की नींव रखने का प्रयास कर सकता है। यह अध्ययन को नया दृष्टिकोण भी दे सकता है और भविष्य में वर्णनात्मक और प्रयोगात्मक अध्ययनों को जन्म दे सकता है। प्रस्तुत अनुसंधान की प्रकृति गुणात्मक एवं सकारात्मक है एवं शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

- **डेटा संग्रह:** प्राथमिक डेटा स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया जायेगा और द्वितीयक डेटा वेबसाइट, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं आदि के माध्यम से एकत्र किया जायेगा।
- **अध्ययन क्षेत्र:** विद्यालयी वातावरण और संसाधनों का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।
- **प्रदत्तों का संकलन के उपकरण:** एसपीएसएस, एक्सल
- **नमूना आकार:** प्रस्तुत शोध अध्ययन में 400 किशोरों का चयन किया गया है।
- **न्यादर्श:** न्यादर्श जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा होता है जिसे अवलोकन और विश्लेषण के लिए चुना जाता है। यह जनसंख्या की वस्तुओं या व्यक्तियों के एक भाग या उप-समूह से मिलकर बना संग्रह होता है जिसे जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने के स्पष्ट उद्देश्य से चुना जाता है।
- **न्यादर्श की प्रकृति:** यादृच्छिक तकनीक द्वारा किया गया है।

7. प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्शचयन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु स्तरित यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया है।

8. शोध उपकरण

प्रत्येक शोध की महत्ता उपकरण पर निर्भर करती है क्योंकि उनकी उपयुक्तता वैधता एवं विश्वसनीयता पर ही प्रदत्तों की विश्वसनीयता एवं वैधता निर्भर करती है। इससे प्राप्त निष्कर्षों की क्षमता द्वारा व्यवहारिक व उपयोगिता निर्धारित होती है। अतः प्रत्येक शोधकार्य में उपर्युक्त उपकरणों का चयन एवं विकास आवश्यक है। अतः प्रत्येक शोधकार्य में उपर्युक्त उपकरणों का चयन एवं विकास आवश्यक है।

शोध उपकरण प्रस्तावित शोध कार्य में विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ यशवीर सिंह (आगरा) एवं डॉ महेश भार्गव (आगरा) द्वारा निर्मित उपकरण संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (EMS) का प्रयोग किया जाएगा। अन्य एमएस एक्सेल और आईबीएम एसपीएसएस एवं स्वनिर्मित प्रश्नावली।

9. प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या

तालिका संख्या-1 सरकारी तथा गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

वर्णनात्मक								
भावनात्मक परिपक्वता पैमाना								
अधिकतम	एन	माध्य	एसटीडी. विचलन	एसटीडी. गलती	95%माध्य के लिए विश्वास अंतराल		न्यूनतम	
					निचली सीमा	ऊपरी सीमा		
महिला	200	161.7150	22.33468	1.57930	158.6007	164.8293	56.00	210.00
पुरुष	200	166.1000	21.04959	1.48843	163.1649	169.0351	116.00	235.00

तालिका 4.1 में दिए गए आँकड़ों के अनुसार, सरकारी और गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला और पुरुष छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में कुछ समानताएँ और अंतर हैं। महिला छात्रों का संवेगात्मक परिपक्वता का माध्य 161.72 है और पुरुष छात्रों का माध्य 166.10 है, जिससे पुरुष छात्रों की परिपक्वता थोड़ी अधिक है। महिला छात्रों में संवेगात्मक परिपक्वता में विविधता (मानक विचलन) थोड़ी अधिक है, जबकि पुरुष छात्रों में यह कम है। दोनों समूहों के लिए संवेगात्मक परिपक्वता का न्यूनतम मान 56.00 और अधिकतम मान 235.00 है, जो उच्च स्तर की विविधता को दर्शाता है। कुल मिलाकर, महिला और पुरुष छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में मामूली अंतर है, लेकिन दोनों के स्तर में कोई बड़ा अंतर नहीं है।

तालिका 2 सरकारी तथा गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विज्ञान एवं वाणिज्य विषयों के छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

वर्णनात्मक								
भावनात्मक परिपक्वता पैमाना								
	एन	माध्य	एसटीडी. विचलन	एसटीडी. गलती	95% माध्य के लिए विश्वास अंतराल		न्यूनतम	अधिकतम
					निचली सीमा	ऊपरी सीमा		
वाणिज्य	134	160.5821	22.86913	1.97559	156.6744	164.4897	56.00	203.00
विज्ञान	156	166.9167	21.24692	1.70112	163.5563	170.2770	118.00	235.00
कुल	290	163.9897	22.19939	1.30359	161.4239	166.5554	56.00	235.00

तालिका 4.2 में विद्यालयों में अध्ययनरत वाणिज्य और विज्ञान विषयों के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के बारे में वर्णनात्मक आँकड़े दिए गए हैं।

वाणिज्य विषय के छात्रों का माध्य 160.5821 है, और मानक विचलन 22.86913 है, जो यह दर्शाता है कि इन छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में कुछ भिन्नताएँ हैं। 95: विश्वास अंतराल के अनुसार, वाणिज्य छात्रों का माध्य 156.6744 से 164.4897 के बीच स्थित है। न्यूनतम मान 56.00 और अधिकतम मान 203.00 है, जो वाणिज्य विषय के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में विविधता को दर्शाता है।

विज्ञान विषय के छात्रों का माध्य 166.9167 है, जो वाणिज्य छात्रों से थोड़ा अधिक है। मानक विचलन 21.24692 है, जो विज्ञान छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में भी कुछ भिन्नताओं को दर्शाता है। 95: विश्वास अंतराल के अनुसार, विज्ञान छात्रों का माध्य 163.5563 से 170.2770 के बीच है। न्यूनतम मान 118.00 और अधिकतम मान 235.00 है, जो इन छात्रों के संवेगात्मक परिपक्वता में उच्च स्तर की विविधता को दर्शाता है। कुल आँकड़ा (वाणिज्य और विज्ञान विषयों के सभी छात्रों का संयुक्त डेटा) का माध्य 163.9897 है, और मानक विचलन 22.19939 है। 95: विश्वास अंतराल के अनुसार, कुल छात्रों का माध्य 161.4239 से 166.5554 के बीच है। न्यूनतम मान 56.00 और अधिकतम मान 235.00 है, जो संवेगात्मक परिपक्वता में सामान्य विविधता को दर्शाता है।

इस तालिका के आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वाणिज्य और विज्ञान विषयों के छात्रों के बीच संवेगात्मक परिपक्वता में मामूली अंतर है, लेकिन यह अंतर इतना बड़ा नहीं है कि इसे महत्वपूर्ण माना जा सके।

9. निष्कर्ष

विद्यालयी वातावरण और संसाधनों का विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि विद्यालय का सामाजिक और शैक्षिक वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, मानसिक स्वास्थ्य सुविधाएं, और सहायक संसाधन विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जहां सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी होती

है, वहीं गैर सरकारी विद्यालयों में बेहतर सुविधाएं और अधिक सशक्त समर्थन प्रणाली के कारण विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सकारात्मक प्रभाव देखा जाता है।

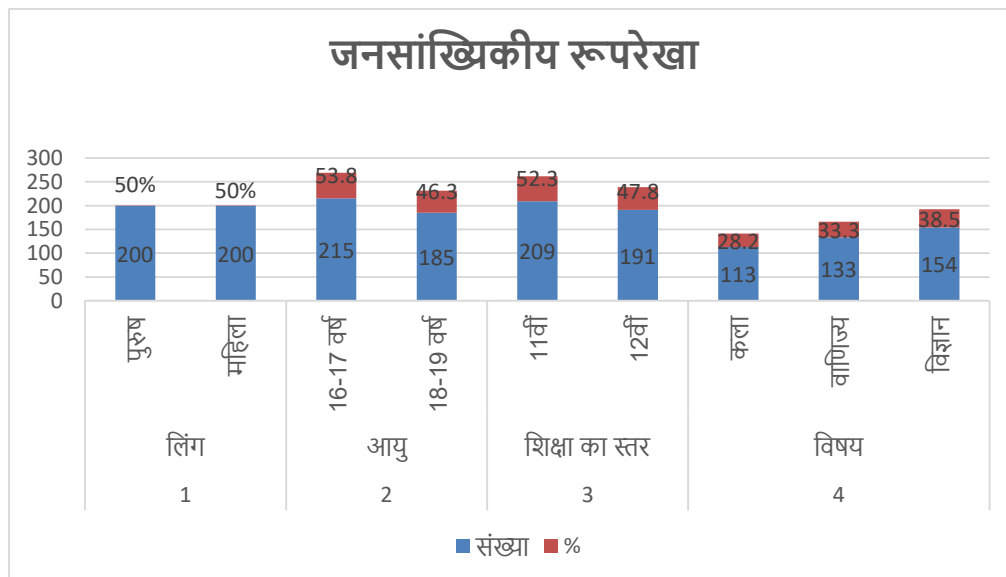
❖ **सुझाव:**

1. **विद्यालय का वातावरण सुधारें:** विद्यालयों में सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाने के लिए शिक्षक-शिक्षिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विद्यार्थियों के बीच अच्छे सामाजिक संबंध हों और उन्हें मानसिक समर्थन भी मिले।
2. **संसाधनों का सुदृढ़ीकरण:** विद्यालयों में अधिक संसाधनों का प्रावधान किया जाना चाहिए, जैसे कि मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं, खेलकूद सुविधाएं, और समग्र विकास के लिए अन्य सहायक कार्यक्रम।
3. **शिक्षकों का प्रशिक्षण:** शिक्षकों को संवेगात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे विद्यार्थियों के भावनात्मक और सामाजिक विकास के प्रति जागरूक हो सकें।
4. **समाज और माता-पिता का सहयोग:** समाज और माता-पिता को विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास में योगदान देने के लिए जागरूक किया जाना चाहिए। उन्हें समझाना होगा कि केवल शैक्षिक सफलता ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि संवेगात्मक विकास भी उतना ही आवश्यक है।
5. **तुलनात्मक अध्ययन का विस्तार:** इस अध्ययन को अन्य विद्यालयों और विभिन्न प्रकार के शैक्षिक संस्थानों में भी किया जा सकता है ताकि संवेगात्मक परिपक्वता पर संसाधनों और वातावरण के प्रभाव को और गहरे से समझा जा सके।

इन सुझावों के माध्यम से विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को बेहतर बनाने के उपायों की पहचान की जा सकती है, जो उन्हें समाज में सफल और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाने में मदद करेंगे।

क्रमांक	जनसांख्यिकीय चर	स्वरूप	संख्या	%
1	लिंग	पुरुष	200	50%
		महिला	200	50%
2	आयु	16-17 वर्ष	215	53.8
		18-19 वर्ष	185	46.3
3	शिक्षा का स्तर	11वीं	209	52.3
		12वीं	191	47.8
4	विषय	कला	113	28.2
		वाणिज्य	133	33.3
		विज्ञान	154	38.5

संख्या 3 जनसांख्यिकीय रूपरेखा



लेखाचित्र संख्या 1

तालिका 3 एवं लेखाचित्र संख्या 1, अध्ययन में भाग लेने वाले छात्रों की संख्या 400 है, जिनमें 50% पुरुष (200) और 50% महिला (200) हैं, जो लिंग आधारित समान वितरण को दर्शाता है। आयु वर्ग के संदर्भ में, 16–17 वर्ष के छात्रों की संख्या 215 (53.8%) है, जबकि 18–19 वर्ष के छात्रों की संख्या 185 (46.3%) है, जो दर्शाता है कि अधिकांश छात्र 16–17 वर्ष के आयु वर्ग से हैं। शिक्षा के स्तर के हिसाब से, 11वीं कक्षा के छात्रों की संख्या 209 (52.3%) है, जबकि 12वीं कक्षा के छात्रों की संख्या 191 (47.8%) है, यह दर्शाता है कि अध्ययन में 11वीं कक्षा के छात्रों का अनुपात थोड़ा अधिक है। विषय के आधार पर, विज्ञान (154, 38.5%) को अधिक छात्रों ने चुना है, इसके बाद वाणिज्य (133, 33.3%) और कला (113, 28.2%) का चयन करने वाले छात्रों की संख्या कम है, जो विभिन्न विषयों की लोकप्रियता को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. Emmerling, R. J., Shanwal, V. K., & Mandal, M. K. (Eds.). (2008). Emotional intelligence: Theoretical and cultural perspectives. Nova Publishers.
2. Wang, M. T., Hill, N. E., & Hofkens, T. (2014). Parental involvement and African American and European American adolescents' academic, behavioral, and emotional development in secondary school. *Child development*, 85(6), 2151-2168.
3. डम्स हेनरी ई. 1972 साइकोलोजी ऑफ एडजस्टमेंट, द रोनाल्ड प्रसे कम्पनी, न्यूयार्क पृष्ठ संख्या 90
4. Higgins, S., Hall, E., Wall, K., Woolner, P., & McCaughey, C. (2005). The impact of school environments: A literature review. London: Design Council.
5. देवी, ए० (2010). पंजाब के छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके स्व-संकल्पना, उपलब्धि अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन, शोध ग्रन्थ, शिक्षा संकाय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।
6. Rose, Vanita and Khokhar, Ritu, (2014), “Emotional Maturity and Self-Concept of Secondary School Students in Relation to Type of School, Gender

and Locale”, Indian journal of Psychology and Education, Vol.-4, No.2, pp. 33-37.

7. रश्मिता, के. और जैशमिन, के.एस. (2018) “चेन्नई में सार्वजनिक और निजी वित्त पोषित स्कूलों पर एक तुलनात्मक अध्ययन”, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्योर एंड एप्लाइड मैथमैटिक्स (स्पेशल इश्यू), वॉल्यूम 120 नंबर 5, पृ. 245–254,
8. Nisar, M. A., & Masood, A. (2021). Bureaucracy and the Other: A Systematic Review of Postcolonial Scholarship in Public Administration. Available at SSRN 3886409.